द्वि ती य   अ ध्या य

जैनेंद्रकी   उपन्यास   साधना

- उपन्यासोंकी विशेषताएँ.

-: द्वितीय अध्याय :-

जैनेंद्रकी उपन्यास साधना - उपन्यासोंकी विशेषताएँ .

जैनेंद्रकी उपन्यास साधना :

हिंदी उपन्यास जगतमें जैनेंद्रकुमार मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार के रूपमें पहचाने जाते हैं. पात्रोंके बाह्य जगतकी अपेक्षा उनके भीतरी जगतको उजागर करनेके हेतु जैनेंद्रजीने अपने उपन्यासोंकी सृष्टी की है. उनमें एक क्रम है. सोद्देश्य विचारोंसे प्रेरित उनके उपन्यास अनुठे बने हैं. शिल्पकी नवीनता, कथ्यकी परिधि, उपन्यासोंका संक्षिप्त कलेवर आदि विशेषताओंके कारण उनके उपन्यास पाठकोंको सोचनेके लिए बाध्य कर देते हैं. यद्यपि उनके पात्र विश्वसनीय नहीं लगते, बल्कि युगीन मांगोंके अनुसार अगली पीढीका चित्रण उनमेंसे प्राप्त किया जा सकता है. जैनेंद्रकुमारने ग्यारह उपन्यास लिखे हैं. इन उपन्यासोंकी रचना तिथियोंके बारेमें श्री रघुनाथशरण झालानी, हिंदी साहित्य कोशकार, डॉ. रामरतन भटनागर, श्री. बाँके बिहारी भटनागर, श्रीकृष्ण कमलेश आदि विद्वानोंमें मतभेद हैं. जैनेंद्र द्वारा लिखित ग्यारह उपन्यासोंकी संक्षिप्त जानकारी हम निम्नांकित रूपसे पा सकते हैं.

१. प र ख :

सत्यधन, बिहारी, गरिमा आदि पात्र-पात्रियोंको लेकर लिखा यह उपन्यास अप्रत्यक्ष रूपसे विधवा-विवाह की समस्याके बारेमें जानकारी देता है. भारतेंदुयुगीन औपन्यासिक प्रवृत्ति और प्रेमचंदजीकी उपन्यास सृष्टिके अनुसार इसमें कथ्य आया है. लेकिन औपन्यासिक परिपाटीको छोडकर इस उपन्यासमें नयी धारणाओंको उपन्यासकारने

उजागर किया है. आदर्शवादी सत्यधन और व्यावहारिक बिहारी दोनों मित्र हैं. बालविधवा कट्टोको पढानेका कार्य सत्यधन करता है. गरिमा बिहारी की बहन है. कट्टोके प्रति सत्यधन आकर्षित है. लेकिन निश्छल प्रेम करनेवाली कट्टोके साथ वह विवाह नहीं करता. उसका विवाह गरिमाके साथ होता है. अपने सधवेपनके लिए खरीदी हुयी सिंदूरकी डिबिया, दर्पण कट्टो भेंटके रूपमें भेजती हैं और सत्यधनके मार्गसे हट जाती है. ससुरालकी सारी संपत्ती सत्यधनको देती है. कट्टो अपनी असाधारण भावुकतामें बिहारीके साथ शादी करती है और आत्मपीडनमें जीती है. अन्य उपन्यासोंकी अपेक्षा परख उपन्यासका चरित्र-चित्रण अशक्त प्रतीत होता है. संभवत: इसी कारण ही अन्य उपन्यासोंके समान इसको अधिक महत्त्व नही मिल सका.

२. सु नी ता :

सुनीताको जैनेंद्रकी सर्वश्रेष्ठ औपन्यासिक कृति माना जा सकता है. श्रीकांत और हरिप्रसन्न सहपाठी रहे हैं. हरिप्रसन्न क्रांतिकारी है. श्रीकांत वकील है. काफी दिनोंके बाद दोनोंकी भेंट होती है. श्रीकांतकी पत्नी सुनीता है; जो एकांत जंगलमें नग्न होकर हरिप्रसन्नको भोगामंत्रण देती है. हरिप्रसन्न लज्जित होकर भाग जाता है. हरिप्रसन्नकी दमित वासना यहां सुनीताके माध्यमसे उदात्त बन गयी है. श्रीकांत अपने कामोंमें व्यस्त है. जिसका उपनी पत्नीपर पूरा भरोसा है. बल्कि सुनीता क्रांतिकारियोंके दलमें शामिल होती है. दोन अंतर्विरोधी प्रवृत्तियोंका एकत्रीकरण सुनीतामें समाया है.

३. त्या ग प त्र :

युगांतरकारी उपन्यासोंकी निर्मिती क्षेत्रमेंसे त्यागपत्र एक है. मृणाल मातृ-पितृ विहीन अनिंद्य सुंदरी है. स्कूली जीवनमेंही सहपाठिनी शीलाके भाईसे उसका प्रेम हो जाता है.

भाभजकी मारके उपरांत अधेडै उम्रके फूफासे उसकी शादी होती है. भतीजे प्रमोदसे उसका स्नेह है. पतिगृहमें भी मृणाल प्रताड़ित होती है. मृणाल एक बच्चीको जन्म देती है - जो उचित इलाज न होनेके कारण मर जाती है. पतिके सुखके लिए आत्मपीडामें जीनेवाली मृणाल कोयलेवाले के साथ रहती है. कोयलेवाला गर्भवती मृणालको छोडकर चला जाता है. अस्पतालमें दुबारा मृणाल बच्चीको जन्म देती है. पहलेके अनुसार उसकी भी मृत्यु होती है. घटनाचक्र परिवर्तित होता है. प्रमोद मृणालकी सहायता करना चाहता है. प्रमोदके सुखके लिए वह शहरी जीवन छोडकर सडांध्र समाजमें चली जाती है. स्वयं दु:खमें रहती है; लेकिन भाई-भावज या प्रमोदके घरमें वापस नहीं आती. प्रमोद उसकी मदद करनेके लिए जब उसके पास जाता है;तब उसकी मदद मृणाल स्वीकृत नहीं करती. स्वतंत्र, उन्मुक्त जीवनकी चाह उसमें है. उपन्यासकारने सीमित कलेवरमें इस उपन्यासके माध्यमसे समाजको धक्कासा दिया है.

४. <u>कल्याणी</u> :

अन्य उपन्यासोंके समान नैतिक कथानकका आधार लेकर प्रस्तुत उपन्यासको लिखा है. आत्मकथात्मक शैली में इस उपन्यासकी निर्मिती हुयी है. उपन्यासकी प्रधान पात्री श्रीमती असरानी है. श्रीमती कल्याणी विदेशी शिक्षाप्राप्त विदुषी महिला है. उसका व्यक्तित्व मनोवेदनामें ढला हुआ है. वह महत्वाकांक्षी डॉक्टर है. लेकिन "त्यागपत्र" के " मृणाल " समान उसका व्यक्तित्व भी टूट जाता है. घटनाचक्रमें फंसकर वह डॉ. असरानीसे विवाह करती है. लेकिन उसका असली प्रेम एक युवकसे है जो देशका प्रीमियर बन जाता है. कल्याणीका पति शंकालु है. वह पत्नीपर निर्भर है.

५. सु ख दा :

सुखदाका कथानक घटनाओंके वैविध्यके कारण आक्रांत बना हुआ है. प्रधान पात्री सुखदाको उसका जीवन अपने लिए भार बन गया है. धनी घरकी कन्या और विवाहिता होनेपर भी वैचारिक असमानताके कारण उसके संबंध अपने पतिसे संतोषजनक नहीं है. लेकिन इस सूत्रको लेकर घटनाओंका जो ताना-बाना उपन्यासकारने बनाया है, वह थोडासा विचित्र ही लगता है. सुखदा लाल की ओर आकर्षित होती है. अनावश्यक अप्रासंगिक विवरणोंसे कथा अशक्त बनी हुयी है. क्रांतिकारी दलसे भी उसका संबंध आता है. "इस प्रकार घर तो क्षय होता ही है, बाहर भी बिना टूटे नहीं रहता. सामाजिक जीवन और पारिवारिक जीवनमें सामंजस्य खोजने की प्रक्रियामें वह नैराश्य भावनाका प्रसार करती हुयी अत्यधिक आत्मपीडा भोगती है. ...सुखदाके जीवनकी मूल समस्या अहंकार है. जिसके उत्सर्गके लिए वह अपनेको पीडाकी अग्निमें डाल देती है."[१]

६. वि व र्त :

जैनेंद्रका यह पहला उपन्यास है, जिसमें नायक प्रधान है. उसकी प्रेमिका भुवनमोहिनी बॅरिस्टर नरेशकी पत्नी बनती है. निराशा तथा शून्यतासे जितेन अधिक धनाढ्य लोगोंको हानि पहुँचाने के हेतु क्रांतिकारी दलकी स्थापना करता है. ट्रेन गिराता है भुवनमोहिनीका हरण करता है. उसे कष्ट देता है. धनकी दीवारके कारण निर्मित जितेनकी कुंठाको दूर करनेके लिए नरेश और भुवनमोहिनी प्रयत्न करते हैं. जितेनका अहम् पराजित होता है.

---

१. जैनेंद्र उपन्यास और कला - डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ, संस्करण १९७८ पृ.५५

७. व्य ती त :

इस उपन्यासका नायक कवि जयंत है. अनिता जयंतकी प्रेमिका है, लेकिन उसका विवाह मि.पुरी से हो जाता है. जयंत, प्रौढावस्थामें पहुँचकर अपने-आपको टूटासा अनुभव करने लगता है. पचहत्तर रूपयोंकी नौकरी करता है. पिताकी मृत्युके बाद प्राप्त ढाई हजार रूपया बडी बहनको देता है. कुमारकी चचेरी बहन चंद्रीसे उसका विवाह होता है, लेकिन इसमें वह सफल नहीं हो पाता. संपादककी पुजी जयंतका साहचर्य चाहती है, जयंत इसमें असमर्थता प्रकट करता है. आगेकी कथावस्तु उलझी हुयी है. जयंत,अनिता, चंद्री,पुरी तथा कपिला आदि पात्र उपन्यासकारके हाथोंकी कठपुतली बन गये हैं. " जयंतकी यौनाकांक्षाकी परिपूर्णता में सहायक होकर अनिता प्रियके प्रेम दाहको अपनी देहताप द्वारा खंडित होनेसे बचाती हुयी पत्नीत्व और प्रेयसीत्वमें जाती है. इस कृतिमें उपन्यासकारने बुध्दि और हृदय या भावनाजगत और व्यवहार जगतके संघर्ष के आलोकमें जीवनकी व्यर्थताका चित्रण किया है."[२]

८. जयवर्धन :

अमरिकन पत्रकार विलवर हस्टनकी लिखी डायरीके रूपमें प्रस्तुत उपन्यासको लिखा है. कथा तथा वैचारिकताकी दृष्टिसे यह उपन्यास अन्य उपन्यासोंसे पूर्णत: भिन्न है. आचार्य स्वामी चिदानंद, इंद्रमोहन, लिजा, इला तथा नाथ आदि पात्रोंको लेकर उपन्यासकी निर्मिती हुयी है. जयवर्धन नायक है,जो विवाह-संस्था मे विश्वास नहीं करता. उपन्यास दो सूत्रोमें विभाजित है. कथानायक जयवर्धनके वैयक्तिक और राजनीतिक जीवनका आधार लेकर ये सूत्र गतिशील

---

२. जैनेंद्र - उपन्यास और कला - डा. विजय कुलश्रेष्ठ, संस्करण १९७८ पृ. ५६-५७

बने हैं. प्रेम और विवाहका संघर्ष इसमें चित्रित हैं. लेकिन तर्क-सूत्रता विचार, दर्शन, सामाजिक आदर्श, राजनितिक घात-प्रतिघात, स्वार्थ और दलगुट, व्यक्ति वादिता आदिके कारण " जयवर्धन " उपन्यास बोझील बन गया है.

९. मुक्तिबोध :

राजनीतिक और सामाजिक चेतनाकी अगलीकडी मुक्तिबोध है. मनोवैज्ञानिक द्वंद्वात्मक परिस्थितिकी झाँकी यहाँ मिलती है. मि. सहाय कामराज योजनाके अनुसार मंत्रीत्वका त्याग करना चाहते हैं. बल्कि मनसे नहीं; बाहरी दिखावटके लिए. परिवार, मित्रगण और संसदके अन्य सदस्य उनका अनुरोध करते हैं. गांधीवादी सिध्दांतोंका पालन वे करना चाहते हैं. लेकिन प्रेयसी नीलिमा उन्हें राजनीतिमें धकेल देती है. पुत्र विरेश्वर, बेटी अंजलिके प्रश्न उनके सामने हैं. भारतकी केंद्रिय सत्तामें परिवर्तनकी आवश्यकताको लेकर, दलोंकी गटबंदियोंको लेकर यह उपन्यास निर्मित हुआ है. सहायकी आत्मपीडाका चित्रण इसमें प्रधान है. दलके सदस्योंकी पदकी आसक्ति, गांधीके विचारोंके विरूध्द आचरण और स्वार्थवृत्तिको इसमें उजागर किया है. घर बाहरकी विषमताके साथ व्यक्तिके अंतर्बाह्य समस्याओंका चित्रण यहाँ है.

१०. अनंतर :

" जयवर्धन " उपन्यासमें स्थित चिंतन प्रणालीकी विकसित आवृत्ती " अनंतर " उपन्यास है. आत्मकथात्मक शैलीमें यह उपन्यास लिखा है. पुत्र और पुत्रवधुको मधुपर्व मनाने के लिए जब प्रसाद उन्हें स्टेशनपर विदा करके वापस लौटता है, तभी वह स्वयं व्यर्थताका अनुभव करता है. पलायन की भावना उसमें उभर आती है. गुरु आनंद माधव और अपराका प्रस्ताव उसे माउण्ट-आबू ले जाता है. नारीकी स्वेच्छाचारी

तृप्तिको प्रसाद आतंक समझाते हैं. जैनेंद्रके अन्य उपन्यासोंके समान इसमें भी प्रेम, ~~म~~ स्वतंत्रता आदि समस्याओंको उठाया है.

११. अनामस्वामी :

जजके पदका त्यागपत्र देकर अनामने हरिद्दारमें आश्रम बनाया है. जहाँ जज दयाल, विधवा पुत्री मंजू तथा नातिन उदिताके साथ आ बसते हैं. उदिता प्रोफेसर उपाध्याकी बुध्दिवादी वैचारिक संस्थासे संबंध रखती है. उपाध्यायकी प्रेमिका वसुंधरा है; जिसका विवाह राजकुमारसे होता है. राजकुमार रुग्णताके कारण वसुंधराकी जीवन तृप्ति नहीं कर पाता. वह उसे उपाध्यायके पास भेजता है. लेकिन प्रोफेसर उसके समर्पण को ठुकराते हैं. वसुंधरा मानसिक शांतिके लिए अनामके आश्रममें जाना चाहती है. उसका विरोध उपाध्यय करते हैं. उदिता माता और नानाके विचारोंको झकझोरती हुयी अमरिका जाती है. उपाध्याय वसुंधराकी हत्या करके दस वर्ष जीवित रहते हैं. उपाध्याय आजीवन भारतीय आश्रम संस्कृतिका विरोध करते हैं और नैतिक मूल्योंमें परिवर्तनकी अपेक्षा करते हुये अनेकानेक उपक्रम करते हैं.

उपन्यासोंकी विशेषताएँ

उन्नीसवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें हिंदी साहित्यमें उपन्यास विधाका प्रादुर्भाव हुआ. प्रारंभिक कालमें यह औपन्यासिक धारा श्रृंगारी, जासूसी और ऐय्यारी कथानकोंके अंतर्गत ही सीमित रही. उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंदने इस काल्पनिक जगतको व्यावहारिक पृष्ठभूमिपर लाया. उन्होंने आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यासोंकी निर्मिती की. जन-जीवनका वास्तविक चित्रण असमें आने लगा और उपन्यासोंकी नयी-धारा सामने आयी. प्रकृति, किसान, समाज, गांव आदिका चित्रण अन्य साहित्यकारोंने भी खुलकर किया. लेकिन इस

परिपाटीको झकझोरनेका कार्य सर्वप्रथम जैनेंद्रकुमारने किया. सागरमें ज्वार आता है और देखतेही देखते नष्टप्राय हो जाता है. उपन्यास क्षेत्रमें भी नयी-नयी मान्यताएं आयी और परिस्थितियोंके परिवर्तनोंके साथ लुप्त हुयी. बल्कि जैनेंद्रजीने जिस मनोवैज्ञानिक धाराको उठाया, उसे अंततक निभानेका कार्य वे आजतक कर रहे हैं. उनके सभी उपन्यासोंमें व्यक्तिके बाह्य चित्रणकी अपेक्षा आंतरिक चित्रणको अधिक बल मिला है. प्राय: परिस्थितियोंके प्रति व्यक्ति अंतरंगमें प्रतिक्रियाएँ रहती हैं. उन छिपी प्रतिक्रियाओंको सामने लानेका प्रयास जैनेंद्रजीने किया है. उपन्यासोंके संक्षिप्त कलेवरमें गिने-चुने पात्रोंको लेकर ही उन्होंने अहं, स्वतंत्रता, विचार, दर्शन, सत्यनिष्ठा, आदर्श आदिके बारेमें लिखा है. औपन्यासिक जीवनकी बहिर्मुखताके प्रति जैनेंद्रने जो विद्रोह किया है, वह उपन्यासके क्षेत्रमें असीम कालतक रहेगा. अपनी इस नयी पृष्ठ भूमिको व्यक्त करते हुये उपन्यासकारने " परख" की भूमिकामें लिखा है - " (इसमें) न भाषाका शिकंजा है, न भावका; दोनों किसी कोडके नियमोंमें बांधकर नहीं रह सकते. ....उपन्यासमें जैसी दुनिया है, वैसीही चित्रित नहीं होती; दुनियाका कुछ उठा हुआ, उन्नत, कल्पित रूप चित्रित किया जाता है. .... उपन्यासका काम है कुछ आगेकी भविष्यकी संभावनाओंकी जरा झांकी दिखाना और जो कुछ अब है, उसकी तह हमारे सामने खोलकर रख देना. उपन्यास एक नये, अजीबही ढंगसे रँगे और उपादेय जीवनका चित्र हमारे सामने रखता है. जीवनके साधारण कृत्य उलझी गुत्थियोंको (उपन्यास) सुलझाकर और खोल-खोलकर रख देता है. उपन्यास इस तरह सत्यमें स्वप्नकी पुट देकर, वास्तवमें कल्पना मिलाकर, व्यवहारसे आदर्शका साम्य और सामंजस्य स्थापित कर और वर्तमानपर भविष्यका रंग चढाकर जीवनका वह रूप पेश करता है.- जो जीवनसे मिलता-जुलता है, फिर भी अनोखा है. जिससे मनोरंजन भी प्राप्त होता है और

शिक्षा भी, और जिससे हठात् एक नयी चीज हृदयमें बैठ जाती है और हम जरा आगे बाढ जाते हैं. " १ अपने उपन्यासोंका अन्य उपन्यासकारके उपन्यासोंसे निरालापन समझाते हुये जैनेंद्रजीने ऊपर जो बात बतायी है, वही उनकी निजी विशेषता बनी है. साधारण भावको फुलाना, पंक्तियोंमें लबासा रिक्तस्थान छोडना, कथानकमें गति-लाना, कभी कभी उसमें रुध्दता निर्माण करना जैनेंद्रकी विशेषत है. डा. मनमोहन सहगल उनके उपन्यासोंके बारेमें लिखते हैं कि- "थोडा कहना, शेष पाठकके अनुमानपर छोड देना, पिण्ड ब्रह्माण्ड की एकनामें व्यक्तिपरक कहकर भी समाजका प्रतिनिधित्व करना, बाह्य यथार्थमें से अंतर्मुखी हो सत्यकी शोध करना, मौलिक कथाको किसी दूसरेकी कृति कहकर पाठकके मनमें आकर्षण जगाना आदि बातें जैनेंद्रके टेकनीकको प्रदर्शित करती हैं. "२

जैनेंद्रकुमारने अपने उपन्यासोंके सीमित कलेवरमें अधिक आशय भरा है. उपन्यास मनोवैज्ञानिक होने के कारण व्यक्ति के मानसिक व्दंव्दका गहरा चित्रण उनमें हुआ है. उपन्यासोंमें तीन चौथाई बातें अनकही रह गयी हैं. पाठकको उन्हें समझानी पडती हैं. "सुखदा" " कल्याणी", "त्यागपत्र" आदि उपन्यासोंमें इस मित-भाषीता प्रणालीका प्रयोग हुआ है. उपन्यासोंमें पात्रोंके आंतरिक जगतकी व्यथा भावोंका अनुसार साकार हुयी है. भावोंके अनुकूलही भावाभिव्यक्ति हुयी है. पीडाकी आर्द्रता साहित्यकारकी निजी अनुभूति होनेसे उसमें सूक्ष्मता आयी है. "सुनीता" का मानसिक संघर्ष, "मृणाल" की पापकी धारणा, " कल्याणी "का विषादोन्माद आदिमें जैनेंद्रका साहित्य स्थूलसे सूक्ष्मकी ओर प्रतिक्रियात्मक ढंगसे अवतरित होता जा रहा है. " जैनेंद्रके साहित्यका मुख्य स्वर-मानव जीवनकी सहजता और सत्यताकी अभिव्यक्तिमेंही मुखरित हुआ है.

---

१. परख - जैनेंद्रकुमार - संस्करण १९८४ कुछ शब्द - पृ. ३-४

२. उपन्यासकार जैनेंद्र -मूल्यांकन और मूल्यांकन-डा. मनमोहन सहगल - प्रथम संस्करण १९७६ पृ. २४

नित्य-प्रतिके जीवनमें व्यस्त व्यक्ति असंतुष्ट, उद्विग्न और उत्पीडित है, किंतु वह नहीं जानता कि उसके असंतोषका उत्स कहां गर्भित है ? वह परिस्थिति के समक्ष विवशसा बना रहता है. पारस्परिक तनाव, विद्रोह और विक्षोभके कारण वह व्यक्ति-व्यक्ति के मध्य एक गहरी खाई उत्पन्न कर देता है. किंतु यह जाननेकी चेष्टा नहीं करता कि, ऐसा क्यों हैं ? क्यों उसकी निजता अथवा "स्व" "पर" से विमुख होकर द्वेष और घृणाका कारण बनती है ? जैनेंद्रने कस्तुरी-मृग के सदृश्य भ्रमितमानवको स्वकेंद्रित अहंता बोध कराया, जो समस्त द्वंद्वोंका मूलाधार बनी हुयी है."[१]

जैनेंद्रके सभी उपन्यास सोद्देश्य हैं. प्रेम, विवाहकी समस्याएँ, काम अभुक्ति, सफल असफल प्रेमकी निर्मिती, पत्नीत्व और प्रेयसीत्वकी उलझन, स्वार्थ-निस्वार्थ, समाज, राजनीतिके दाँवपेंच, आत्मपीडामें रहकर दूसरोंकी वेदना दूर करना, भविष्यकी अवतारणा आदि विषयोंका विवेचन उनके उपन्यासोंमें आया है. " परख" ,"सुनिता" "त्यागपत्र", "कल्याणी","सुखदा" आदि जो शीर्षक आये हैं वे भी सोद्देश्य बने हैं. विषयोंके बोधका उद्घाटन उनमें हुआ है. गृहीत और विपरीत अर्थोंका समाधान पात्रोंके कार्य व्यापारोंसे प्राप्त होता है. विपरीत बोधी या निष्कर्ष बोधी नामकरणोंकी सहायतासे प्रस्तुत उपन्यास असाधारण पात्रोंकी जानकारी देते हैं. इन पात्रोंमें आत्म प्रधानता होकर भी इन्होंने कभी "पर" का निषेध नहीं किया है. मानवीय रूपोंका उचित चित्रण उनके उपन्यासोंमें समाहित है. विविधताओंका दिग्-दर्शन करते-करते उपन्यासकारने उद्देशकी अभिव्यक्ति सूत्रात्मक ढंगसे की है. आत्मनिष्ठाको मनोविज्ञानका आधार दिया है, जिससे परिस्थितियोंके परिवेशमें भी व्यक्तिका स्थान ऊँचा और अडिग रहा है.

---

१. जैनेंद्रका जीवन दर्शन - डा. कुसुम कक्कड - प्रथम संस्करण १९७५ पृ. २५०

मानव जीवनकी विराट भूमिको समेटनेका कार्य जैनेंद्रके उपन्यासोंमें हुआ है. घटनाओंका जाल उन्होंने नहीं फैलाया है. बल्कि सीमित क्षेत्रमेंही विविधताओंको संग्रहीत करके प्रभावोत्पादकता लायी है. कानून और नियमोंके कारण सामाजिक हार्दिकता अधिक देरतक टिक नहीं पाती. इसलिए ही उपन्यासोंमें मानवी संवेदनाओंका स्वर अधिक मुखरित हो उठा है. अहं का विसर्जन करना उपन्यासोंकी विशेषता बनी है.

जैनेंद्रके उपन्यासोंमें आदर्शवादिताका स्वर मुखरित हुआ है. जैनेंद्र मूलत: आदर्शवादी उपन्यासकार हैं. मानव जीवनकी गहरी रुचिमें विश्वास रखकर उनके उपन्यासोंका सृजन हुआ है. साहित्यको एक प्रेरक शक्ति मानकर जैनेंद्रजीने उपन्यासोंकी निर्मिती की है. परिणामत: जैनेंद्रके साहित्यका प्रधान लक्ष्य आदर्शवादी रहा है. व्यक्तिके अंतर्मनकी उलझी गुत्थियोंको सुलझाकर शन: संघर्षको निष्कर्षकी ओर उपन्यासकारने प्रवृत्त किया है. पुराने स्थापित मूल्योंको उन्होंने उपन्यासोंमें बौध्दिकताकी कसौटीपर कसा है. नारीका सतीत्व, पतिपरायणता, निष्ठा, त्याग और उत्सर्ग आदिके वकील स्वयं साहित्यकार बने हैं. जिससे " मृणाल", "भुवनमोहिनी", "वसुंधरा" आदिके प्रति पाठक स्वयं सहानुभूति महसूस करते हैं. " जैनेंद्रकी सबसे बडी विशेषता यह है कि उनके पात्र पाठककी संभावनाके विपरीत क्यों न जायें, किंतु वे पाठककी संवेदनासे वंचित नहीं हो पाते. कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे "त्यागपत्र" की मृणालको अपनी हार्दिकता अर्पित करनेमें संकोच हो अथवा कल्याणीके विक्षोभ और पीडापर किसका मन झुँझलाहटके साथही सहानुभूतिसे न भर उठेगा ?"[१]

---

१. जैनेंद्रका जीवन दर्शन - डा. कुसुम कक्कड - प्रथम संस्करण १९७५ पृ. २६१

जैनेंद्रके उपन्यासोंकी मनोवैज्ञानिकता असाधारण है. मानवकी गहन गुत्थियोंको सुलझानेका काम यहां हुआ है. जिससे पात्र अंतर्द्वंद्वमें फँसे हुये हैं. " मुक्तिबोध " का सहाय पदका स्वीकार करूँ या न करूँ इस द्वंद्वमें फँसा है. समष्टिकी अपेक्षा व्यष्टि-कन्द्रासपरही यहाके चित्र निकाले है. व्यक्तिके माध्यमसे परोक्षरूपसे समाजकी व्याख्या की है. बौध्दिक विश्लेषण, मानसिक संघर्ष विचारोंके गर्त, नियम-कानून-समाज आदिकी व्याख्या इनसे अंतर्द्वंद्व अधिक बढ गया है. सेक्स, प्रेम-विवाह, स्वार्थ तथा अहम् के कारण ये गुत्थियाँ अधिक उलझी हुयी प्रतीत होती हैं. कामकी परिपूर्ति पात्रोंके जीवनमें अधूरी रही हैं. क्रांतिकारी पात्रोंका व्यक्तित्व काम अभुक्तिसे ग्रस्त है. " ये क्रांतिकारी वास्तवमें उपहासके पात्र बन गये हैं. क्योंकि इनका अस्तित्व काम-अभुक्तिसे है. इनके जीवनमें प्रेमका सामंजस्य नहीं हो सका , बस इसी क्षोभमें वे बंदूक-पिस्तौलकी भाषा बोलने लगते हैं."[1] " कल्याणी " का अंतर्द्वंद्व बाहय जीवनको उद्वेलित करता है. "सुखदा", "विवर्त" उपन्यासोंमें भी इस द्वंद्वकी निर्मिती हुयी है.

गांधीके सिध्दान्तोंको उपन्यासोंमें स्थान मिला है. अहिंसा, अहं के दमन और हिंसाके तिरस्कारको जैनेंद्रजीने महत्व दिया है. मानवकी सामाजिक, धार्मिक मान्यताओंको बौध्दिकताकी कसौटीपर परखते हुये जैनेंद्रजीने अहिंसाकी प्रतिष्ठा सभी क्षेत्रोंमें करनेका प्रयास किया है. जैनेंद्र गांधीवादी हैं. ~~अहिंसाकी प्रतिष्ठा सभी क्षेत्रोंमें करनेका प्रयास किया है. जैनेंद्र गांधीवादी है.~~ अहिंसाकी उनकी धारणा

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्र - मूल्यांकन और मूल्यांकन - डा. मनमोहन सहगल प्रथम संस्करण १९७६ - पृ. ३०

सक्रिय और प्रेरणादायिनी हैं. उनके उपन्यासोंमें क्रांतिकी अपेक्षा प्रेम और आत्मपरिष्कारसे कुंठाओंको और तिरस्कार को दूर किया है. त्यागपत्र की मृणाल समाजके प्रति विद्रोह नहीं करती. " मुक्तिबोध " के सहायबाबू गांधीके सिध्दांतोंमें विश्वास रखते हैं. " भुवनमोहिनी ", "उदिता" आदि पात्र प्राप्त परिस्थितियोंमें विस्फोटक रूप धारण नहीं करते. उनकी औपन्यासिक कृतियोंके पात्र अपने जीवनके प्रश्नोंमें दिलचस्पी लेते हैं, युग विशेषकी समस्याओंकी ओर ध्यान नहीं देते.

जैनेंद्रके उपन्यासोंमें पात्रोंकी भारमार नहीं है. गिने-चुने पात्रोंके माध्यमसे उपन्यास जगतको जैनेंद्रजीने सँवारा है. आनेवाला हर क्षण नवीन है और बीता पुराना हो जाता है. लेकिन इससे साहित्यकी अखंडतामें बाधा निर्माण नहीं हो सकती. सभी पात्रोंका एक दूसरेसे प्रस्थापित संबंध तुरंतही ध्यानमें आता है. प्रेमचंदजीके औपन्यासिक पात्रोंके समान जैनेंद्रजीके उपन्यासोंके विकास अधूरा नहीं रहा है. प्रेमचंदके उपन्यासोंमें पात्रोंकी भारमार होनेसे उचित विकासके लिए अवसर प्राप्त नहीं है. लेकिन जैनेंद्रजीके औपन्यासिक पात्र भीतरी जगतके पात्र रहनेसे उनका विकास अत्यधिक हुआ है. पीढी-दर-पीढी की कथा यहां नहीं है. घटनाओंका क्रम और तत्कालिन परिस्थितिके परिप्रेक्ष्यमें उपन्यासका ढाँचा शिल्पकी दृष्टीसे स्पृहणीय बना है.

पुरुष पात्रोंकी अपेक्षा नारी-पात्रोंका चारित्रिक विकास उपन्यासोंमें अधिक हुआ है. जैनेंद्रके अनेक उपन्यास नारी-प्रधान बने हैं. उपन्यासोंके शीर्षकोंसेही इसका पता चलता है. नायिकाएं अधिक बलवती बनी है. नारी जातिके प्रति जैनेंद्रजीके मनमें श्रध्दा है.

विस्तृत जीवन दर्शनसे प्राप्त गहरी सहानुभूतिकी अधिकारीणी जैनेंद्रकी नायिकाएँ बनी है. कल्याणी, सुखदा, मृणाल, उदिता, भुवनमोहिनी, नीलिमा उन्मुक्त और स्वतंत्र नारियाँ हैं. घरमें बंद रहने उन्हें अच्छा नहीं लगता. समाजमें आकर अपना स्वतंत्र अस्तित्व दिखानेकी चेष्टा वे करती हैं. जैनेंद्रकी नारी-भावनाका प्रतिनिधित्व ये नारियाँ करती हैं. जहां जाती हैं; वहां वे अपने विचारोंके अनुसार वातावरण बनाती एवं बिगाड देती है. उनके व्यक्तित्वोंके सामने पुरुष दबे हुये हैं. मातृत्वकी भावनासे जैनेंद्रजीने उनकी ओर देखा है. " शायद वर्षोंकी गिनतीपर धान्य देकर कोई भूल कर जाय, पर स्त्री कभी छोटी नहीं होती. वह जातिकी माँ है और हर अवस्थामें भक्तिकी अधिकारिणी है."[१] नारीको अनेक रंगोसे जैनेंद्रजीने उपन्यासोंमें रंगाया है. उपन्यासोंके पुरुष-पात्रोंने भी उनके व्यक्तित्वोंके विकासको अधिक अवसर दिया है. " सुखदा " का कांत सुखदाको स्वातंत्र्य देता है, " विवर्त " का नरेश भुवनमोहिनीको मुक्तता प्रदान करता है. "जयवर्धन" की इला और लिजा भी स्वतंत्रामें विचरण कर रही हैं.

उपन्यास लेखनकी प्रणालीकी दृष्टिसे जैनेंद्रजीके उपन्यासों की ओर देखें तो, जैनेंद्रजीने अपने उपन्यासोंकी सृष्टि परोक्ष, अपरोक्ष दोनों रूपोंसे की है. "त्यागपत्र, सुखदा व्यतीत, मुक्ति बोध, अनंतर" ये उपन्यास आत्मकथात्मक शैलीमें लिखे हैं. " परख, सुनीता, विवर्त " उपन्यास उपन्यासकारद्वारा अवतरित हुये हैं, तो "कल्याणी, जयवर्धन, अनामस्वामी" उपन्यासोंकी निर्मिती अन्य पात्रोंद्वारा हुयी है.

---

१. व्यतीत - जैनेंद्रकुमार - चतुर्थ संस्करण १९७८ पृ. १०५

विवरणात्मक शैली, डायरी शैली, अतीत चित्रण, प्रथम पुरुषात्मक लेखन इन [redacted] प्रणालियोंका उपयोग उपन्यास लेखनमें हुआ है.

जैनेंद्रकुमारके उपन्यास मनोवैज्ञानिक हैं. जिनमें यौन समस्याको भी उठाया है. पात्र अधिक विचारक हैं. लेकिन नियति और आस्थाका सहारा लेकर वे चलते हैं. मानव जीवनकी दैनिक समस्याएँ उपन्यासोंमें आयी हैं. रहस्य और रोमांस जैनेंद्रके उपन्यासोंकी विशेषताएँ है. नारियोंकी आत्मशक्तिका परिचय, दैहिक समर्पण और क्रांतिकारियोंके अड्डे आदि स्थानोंपर रोमांचकी निर्मिती हुयी है. नपे-तुले शब्दोंमें ये, रोमांच प्रकट हुये हैं. रहस्यसे कौतुहल और उत्सुकताकी निर्मिती हुयी है. प्रेमचंदके उपन्यासोंमें दो-चार पृष्ठ छुटनेपर भी घटनाचक्र और कथावस्तु समझमें आती है. लेकिन जैनेंद्रके उपन्यासोंमें दो-चार पंक्तियोंके बाद कथावस्तुको समझना कठिन हो जाता है. पात्रोंका व्यक्तित्व रहस्योंसे आवृत्त बन गया है. मनोविज्ञानको दर्शनने साथ दिया है. "जैनेंद्रजीने अनेक विचार तथा एक विशिष्ट दर्शन अपने उपन्यासोंमें पिरोया है. उन्होंने इसके प्रतिफलनके लिए प्राय: सभी प्रमुख तत्वों-वस्तु, चरित्र, संवाद आदिका सहारा लिया है. किंतु यह कहना होगा कि, उद्देश्य प्रतिफलनका शिल्प खंडित हो गया है, क्योंकि वे वस्तु तथा पात्रोंकी अंतिम परिणति शिल्पके तकाजेसे नहीं वरन् उद्देश्यकी विवशतासे करते हैं."[१]

---

१. जैनेंद्रके उपन्यासोंका शिल्प - ओमप्रकाश शर्मा - प्रथम संस्करण १९७५ - पृ. १५१.